Q. एकाधिकार से क्या समझते है? एकाधिकार के अन्तर्गत मूल्य का निर्धारण कैसे होता है।

Ans- एकाधिकार मतलब एक का अधिकार। जब किसी वस्तु या सेवा का बाजार में एक उत्पादक या विक्रेता होता है तो उसे एकाधिकारी कहते है। एक एकाधिकारी उत्पादक या विक्रेता का कोई ~~न ~~ से प्रतियोगी नहीं होता है साथ-ही-साथ उस वस्तु का भी न तो कोई दूसरा उत्पादक है और नहीं उस वस्तु का निकट स्थापन्न उपलब्ध है। इस प्रकार एकाधिकार का अर्थ एक ही उत्पादक या विक्रेता द्वारा किया गया उत्पादन या विक्रय। एकाधिकार अर्थात monopoly अंग्रेजी के दो शब्द mono + poly से बना है जिसमें mono का अर्थ single तथा poly का अर्थ seller है। अर्थात monopoly का अर्थ है किसी वस्तु या सेवा का single seller। Monopoly is said to exist When there is only one producer or seller of a product which has no close substitutes.

जब बाजार में किसी वस्तु अथवा सेवा का एक उत्पादक या विक्रेता होता है तो उसका उस वस्तु पर पूर्ण नियंत्रण होता है। उसका कोई दूसरा प्रतियोगी नहीं होता है। उदाहरण के लिए किसी शहर में

पेट्रोल की पूर्ति करने के लिए एक ही कंपनी हो तो वह शहर में पेट्रोल की पूर्ति अकेले करेगी, इसी तरह का काम करने वाली दूसरी किसी कंपनी के न होने पर एकाधिकार की स्थिति में होगी जिसपर उसका पूर्ण नियंत्रण होगा। इसप्रकार संपूर्ण विश्लेषण से स्पष्ट है कि एकाधिकार होने के लिए तीन शर्तें ~~आवश्य~~ आवश्यक है—

(i) एक वस्तु या सेवा का एक ही उत्पादक या विक्रेता हो,
(ii) उस वस्तु के निकट स्थापन्न उपलब्ध न हो।
(iii) उस उद्योग में प्रवेश के लिए बड़ी रुकावटें हैं।

शुद्ध एकाधिकार वह स्थिति है जिसमें एकाधिकारी वस्तु की प्रतिलोच शून्य होती है।

अल्पकाल तथा दीर्घकाल में एकाधिकार का कीमत निर्धारण निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है—

i) समरूप वस्तुओं का एक ही उत्पादक या विक्रेता हो।
iv) एकाधिकारी विवेकशील प्राणी है जिसका उद्देश्य न्यूनतम लागतों से अधिकतम लाभ कमाना है।
v) एकाधिकारी विभेदीकरण नहीं करता है अर्थात् अपनी वस्तु के लिए वह सभी उपभोक्ताओं से समान कीमत लेता है।
vi) एकाधिकारी कीमत अनियंत्रित होती है। अर्थात् एकाधिकारी के कीमत निर्धारण पर कोई नियंत्रण नहीं होता है।
vii) उसे अपने मार्केट में अन्य फर्मों के प्रवेश का कोई डर नहीं होता है।

एकाधिकार की अवस्था में कीमत उत्पादन में संतुलन बनाते हुए उपभोक्ता वस्तुओं के अधिकतम कीमत के द्वारा एकाधिकारी अपने लाभ को अधिकतम बनाना चाहता है। एक एकाधिकारी वस्तुओं की अतिरिक्त इकाइयों का उत्पादन तबतक करता रहता है जब तक सीमान्त आय (MR), सीमान्त लागत (MC) से अधिक रहेगी क्योंकि प्रत्येक इकाई उत्पादन से लागत की तुलना में अधिक आय प्राप्त होना एकाधिकारी के लिए लाभकारी स्थिति है। एक एकाधिकारी को लाभ उस उत्पादन स्तर पर अधिकतम होता है जहाँ सीमान्त आय (MR), सीमान्त लागत (MC) के बराबर होती है। इसे अल्पकालिन स्थिति में निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा दिखाते है—

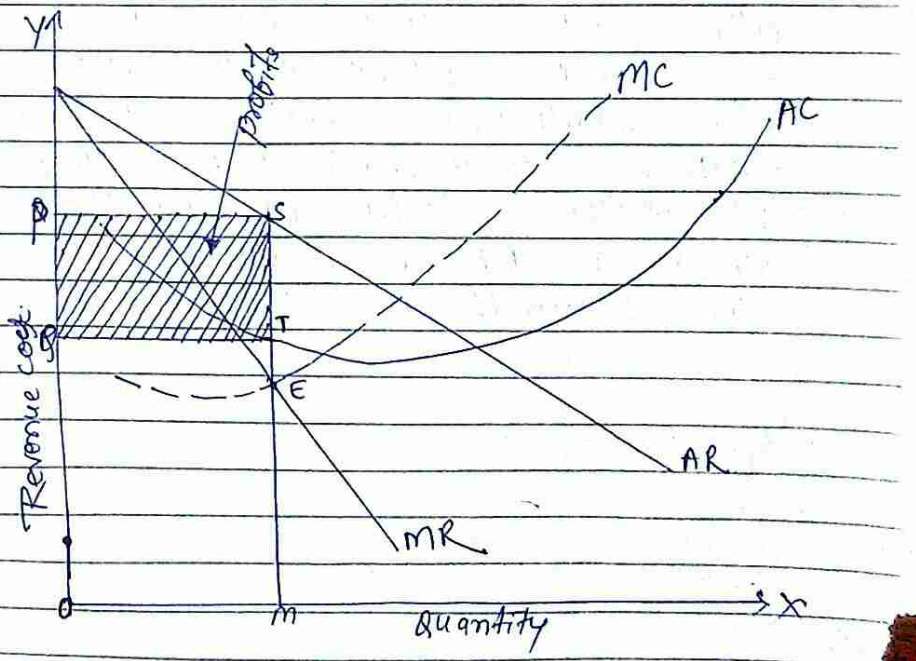

प्रस्तुत रेखाचित्र में OX अक्ष पर वस्तु की उत्पादित मात्रा तथा OY अक्ष पर कीमत तथा आय को दर्शाया गया है। चित्र में स्पष्ट है कि उ एकाधिकारी E बिन्दु पर संतुलन की अवस्था में है क्योंकि E बिन्दु पर ही सीमान्त आय (MR) की रेखा, सीमान्त लागत (MC) रेखा को काट रहीं है अतः इसी संतुलन बिन्दु पर एकाधिकारी Om मात्रा में वस्तु का उत्पादन कर उसकी कीमत Op निर्धारित करता है। चित्र में PQST एकाधिकारी द्वारा प्राप्त लाभ को क्षेत्र प्रदर्शित करता है।

यदि एकाधिकारी Om से कम मात्रा में वस्तु का उत्पादन करेगा तो उसका लाभ कम हो जायगा तथा यदि वह Om मात्रा से अधिक उत्पादन करना चाहेगा तो उसे हानि उठाना होगा क्योंकि इस अवस्था में सीमान्त लागत (MC), सीमान्त लाभ (MR) से अधिक हो जायेगा। अतः एक एकाधिकारी के लिए वस्तु की Om मात्रा सर्वाधिक उपयुक्त है जिसपर उसे अधिकतम लाभ प्राप्त होता है।